Chhattisgarh
TRTI
TRIBAL RESEARCH AND
TRAINING INSTITUTE

गोदना
सभ्यता
छत्तीसगढ़

भुंजिया गोदना

THE PRIMITIVE ART OF CHHATTISGARH

निर्देशन
शम्मी आबिदी

प्रस्तुतीकरण
डॉ. अनिल विरुलकर
मीना धनेलिया
अंकिता कुंजाम
अमर दास
निर्मल बघेल

ISBN: 978-93-5680-064-9

भुंजिया मोहल्ला

FOREWORD

The Bhunjiya Tribe tattoos have one of the most multifarious forms and pattern. These forms of primitive art abide in concepts and stories of Tribal Folk

With this monograph we bucket all the stories related to the Bhunjiya tattoos and their rituals.

SHAMMI ABIDI IAS
Commissioner, ST&SC Development Department,
Director, TRTI ,Chhattisgarh

THE BHUNJIYA TATTOO

पृष्ठभूमि

पृष्ठभूमि

मानव समुदाय का कला के संदर्भ में प्रारंभिक संपर्क चित्रकारी के रुप मे हुआ है, प्रागैतिहासिक कालीन मानवों द्वारा अपनी स्वयं की भावनाओं या विचारों को गुफाओं अथवा चट्टानों की भीतरी दीवारों पर उकेरने का कार्य किया जो उनके अलौकिक जीवन एवं विश्वासों पर आधारित थे। सिंधु घाटी सभ्यता के पुरातात्विक प्रमाणों में भी चित्रकारी युक्त मृदभाण्ड भी पाये गये जिस पर जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों एवं ज्यामितीय रेखाचित्र उनके विचारों से संबद्ध आकृतियों के रुप मे पाये गये। (Sankalia, 1978)

इतिहासकारों का विचार है कि शैलचित्रो का यह स्वरुप शरीर पर गोदने के चिन्ह के रुप मे एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवाहित हुआ है। विभिन्न मानव वैज्ञानिकों के अनुसार गोदना एक प्राचीन कला का स्वरुप है जो प्रायः सभी समुदायों में पाया जाता है।
पेलिनेशिया क्षेत्र की पालिनेशियन मूल की ताहिति भाषा का "टाटू" शब्द स्थायी आभूषण के व्यवहार को प्रदर्शित करता है जो त्वचा के नीचे रंगो के उपयोग से संबंधित है। गोदना एशिया, आफ्रीका, आस्ट्रेलिया एवं पालिनेशिया जैसे उप महाद्विपों में भी पाया जाता है, अफ़्रीका में सम्पूर्ण शरीर पर गोदना वीरता का प्रतीक माना जाता है, साथ ही स्त्रियों के लिये उनकी पहचान (Ethnic Identity) व महान सांस्कृतिक महत्व को प्रदर्शित करता है। यद्यपि पश्चिमी देशों के बहुत से समुदायों मे युवाओं की आधुनिकतम शैली का एक मात्र प्रकार बस है।
शरीर पर गोदना की यात्रा प्रागैतिहासिक कालीन गुफाचित्र, मृदभाण्ड से प्रारंभ होकर एक समुदाय से दूसरे समुदाय, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र से होते हुये अपनी समुदायगत विशेष पहचान, अलौकिक शक्तियों-देवी-देवताओ, गोत्र चिन्ह, प्रकृति प्रेम, जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि के प्रति अपनी श्रद्धा एवं विश्वास को सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से प्रदर्शित करते हुये विशेष पिछड़ी जनजातियों एवं जनजातियों में आज भी प्रचलित एवं हस्तांतरित हो रही है। (नब कुमार दुबे, 2008)

भारतीय परिप्रेक्ष्य में गोदना राजस्थान, उत्तरांचल, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा आदि राज्यों के सहरिया, बुक्सा, कुरुम्बा, पनियन, टोडा, चेंचू, कोंडा-रेड्डी, कुटिया खांड, अबूझमारिया, बैगा, पहाड़ी कोरवा, भारिया, भील, भुंजिया, असुर, बिरहोर, माल पहारिया, बोन्डो, जुआंग, मांकड़िया, सौरा, लोधा, रियांग आदि जनजातियों में देखने को मिलता है।

(फोटो स्रोत - & https://detechter.com/30000-years-old-rock-drawings-at-bhimbetka-in-madhya-pradesh/ ½

1. आदिमकला (Primitive Art)

जनजातीय समुदायों में गोदना (Tattoo) आदिकालीन कला (Primitive Art) का स्वरुप है। मानवशास्त्र में कला के प्रागैतिहासिक (Prehistoric), ऐतिहासिक (historic), आर्थिक (Economics) एवं सौंदर्यता (Aesthetics) पहलुओं पर विवेचना एक प्रमुख केन्द्र के रुप में रही है। भारतीय जनजातीय कला में यर्थाथवाद (Realism) एवं संकेतवाद (Symbolism) दोनों के ही तत्व पाये जाते है। आदिकालीन कला वर्तमान में भी धर्म, अलौकिक विश्वासों, प्रकृति एवं मान्यताओं से अत्यधिक प्रभावित दिखाई देती है, जनजातीय जीवन, धार्मिक आस्था एवं विश्वासों से परिपूर्ण रहा है, इसके धार्मिक जीवन में धार्मिक सामग्रियों, धार्मिक प्रतीक आदि का समावेश होता है, जो इसकी आदिकालीन कला की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम रहा है। आदिवासी जीवन सामान्यतः एकाधिक अलौकिक शक्तियों (supernatural power), स्थानीय देवी-देवताओं (local gods & goddesses) एवं प्रकृति (Nature) पर विश्वास आधारित है, इनके प्रति उनमें भय, श्रद्धा व आदर की भावना होती है तथा यह विश्वास व्यक्त करते है कि इनका समूल क्रिया-कलाप एवं जीवन इन्ही शक्तियों के माध्यम से नियंत्रित होता है। इनका एक काल्पनिक रुप से प्रतीको की मूर्ति अथवा चित्र भी रेखांकित कर लिया जाता है तथा सम्मान भाव स्वरुप इन्हें शरीर के कुछ अंगों पर गुदाई भी कर ली जाती है जो एक कला के रुप में भी अभिव्यक्त की जाने लगी।

प्रागैतिहासिक दृष्टिकोण से भारतीय भौगोलिक क्षेत्र के शैलाश्रयों एवं गुफाओं में भी पाषाणयुगीन संस्कृति के गुफाचित्र अथवा शैलचित्र भी उल्लेखनीय है, जिसमें पशुपालन, शिकार, नृत्य, पशु-पक्षी, अलौकिक देवी-देवताओं, वनस्पति से संबंधित चित्रकारी प्रमुख रही है। भारतीय जनजातियों में मूर्तिकला तथा चित्रकला दोनों ही पायी जाती है। जनजातीय समुदायों में त्यौहारों, पर्वों एवं विवाह आदि उत्सवों में विभिन्न प्रकार के आकृतिनुमा चित्रांकन दीवालों आदि में सामान्य रुप से प्रचलित है। जिसका संबंध पौराणिक गाथाओं और संकेतो (symbolism) से परिपूर्ण होते है, उसी प्रकार की प्रतिकृतियां सौंदर्य बोध या सांस्कृतिक पहचान या अपनी मान्यताओं, विश्वासों के सम्मान स्वरुप जनजातीय समुदायों के व्यक्तियों के शरीर के विभिन्न अंगों पर गोदना के रुप में दिखाई देता है जो भारतीय जनजातीय कला को अभिव्यक्त करता है।

2. गोदना एक पूर्वावलोकन

विभिन्न जनजातीय समुदायों में शरीर के विभिन्न अंगो पर गोदना बनवाना उनकी संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है, गोदना मूलतः चित्रकला है जो शरीर के विभिन्न भागों में बिंदूओं और रेखाओं के माध्यम से आकृति का रुप दिया जाता है। सामान्यतः गोदना शरीर के अलंकरण के लिये किया जाता है। गोदना का प्रयोग सामान्यतः सौंदर्यबोध के दृष्टिकोण से आभूषणों व अन्य श्रृंगार पद्धतियों का एक स्थायी वैकल्पिक रुप है। **डॉ. एम.एल. वर्मा (1992) की कृति ''भीलों की सामाजिक व्यवस्था''** में उल्लेख अनुसार ''अनावृत्त अंगो को विविध आकृतियों और प्रतीक चिन्हों से सजाने की प्रकृति स्त्रियों के लिये सदैव ही प्रसन्नता का विषय रही है, गुदना बनाने की कला इस प्रवृत्ति का आदिम रुप है। गुदना की प्रथा अंग आलेखन कला के रूप में जीवित है, गोदना सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय होता है, कुछ आकृतियों का प्रतीकात्मक महत्व होता है, भील स्त्री के लिये विवाह पूर्व चिरत्या नामक पक्षी की आकृति आंखों के दोनों किनारों पर गुदवाना अनिवार्य समझा जाता है जो उनकी जातीय पहचान का चिन्ह है। सौंदर्य बोध के दृष्टि से यह गुदना चिन्ह आंखों को धारदार, पैना व आकार में लंबी होने का बोध कराने हेतु भी उपर्युक्त माना जाता है। इनमें मान्यता प्रचलित है कि गुदना एक ऐसा आभूषण है जिसका सौन्दर्य अक्षय है, प्रेम व स्नेह प्रकट करवाने में इनका विशेष योगदान होता है तथा कोई स्त्री बिना गोदना गुदवाये मृत हो जाती है तो नरक में मृतक के शरीर को यमदूतों के द्वारा कुरेद कर गड़ढो में डाल दिया जाता है। अतः विवाह पूर्व किसी स्त्री का माता-पिता द्वारा गुदना नही कराया जा सका तो ससुराल पक्ष को दण्ड स्वरुप राशि देना होता है साथ ही शरीर पर गुदना नजर न लगना, जादू-टोना से बचाव आदि मान्यताओं के कारण भी कराया जाता है।'' किन्तु अलंकरण के अतिरिक्त जनजातीय समुदायों में इससे संबंधित धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व चिकित्सकीय आयाम अथवा मान्यताएं प्रचलित है।

THE PRIMITIVE ART OF TRIBAL INDIA

प्रस्तावना

जनजातीय समुदायों में गोदना करना या गोदना बनवाना एक कलाकृति या संस्कृति है, इस तथ्य में विभेद है। सामान्य रूप से गोदना का अर्थ शरीर के एक या एक से अधिक अंगों पर कई बार चोटकर या गड़ाकर या चुभोकर स्थायी आकृतियों का निर्माण करना है। **पापुआ न्यू गिनी के चंबरी झील के क्षेत्र में निवासरत चंबरी जनजाति समूह** में युवाओं के पीठ एवं छाती पर बांस की पतली पत्तियों से अनेक चिरे या घाव लगाकर मगरमच्छ के Scales की भांति नक्काशी की जाती है तथा इन्हें वनस्पतियों की सहायता से भरा या ठीक किया जाता है। जब उनके यह घाव ठीक या सुख जाते है तब उनके शरीर पर एक खुबसूरत नक्काशी आकृति का रुप ले लेती है। इस प्रकार की नक्काशी के पीछे अवधारणा है कि, पुरुष के द्वारा नक्कासी के दर्द को सहनकर लेने से वे जीवन मे कुछ भी कर सकने मे सक्षम हो जाते है वहीं इस जनजाति समुदाय द्वारा **मगरमच्छ को अपना काल्पनिक पूर्वज माना जाता है** तथा इनसे प्रायः इस प्रकार की आकृतियां जनजाति विशेष द्वारा ही अपने समुदाय को एक विशिष्टता प्रदान किये जाने के उद्देश्य से बनाये जाते रहे है।

इसी प्रकार विभिन्न जनजातियों में नुकिले सुईयो या कांटों की सहायता से शरीर के निश्चित अंग/भाग में तथाविशिष्ट आकृति के रुप में ही उकेरे जाते है। जो उनके सामाजिक विशिष्टता को व्यक्त करता है। जिन्हें गोदना या टैटू (Tattoo) कहा जाता है। गोदना प्रत्यक्ष रुप से जनजातियों में अलंकार को प्रदर्शित करता है। **गोदना मुख्य रुप से त्वचा - चित्रांकन से संबंधित है**। पारम्परिक रुप से गोदना एक या एक से अधिक सूईयों को चुभाकर कलाकृति का निर्माण करने से है, जिसमें इसका स्वरुप मुख्य रुप से काले रंग में दिखाई देता है।
"टैटू कला" का सबसे पहला प्रमाण मिट्टी की मूर्तियों के रुप में मिलता है जिनके चेहरे टैटू के निशान का प्रतिनिधित्व करने के लिए चित्रित या उत्कीर्ण थे। इस तरह के सबसे पुराने आंकड़े जापान में 5000 ईसा पूर्व या उससे अधिक पुराने मकबरों से बरामद किए गए हैं।
वास्तविक टैटू के संदर्भ में, सबसे पुराना ज्ञात मानव जिसने अपनी ममीकृत त्वचा पर टैटू को संरक्षित किया है, वह लगभग 3300 ईसा पूर्व का कांस्य-युग का व्यक्ति है। ऑस्ट्रिया और इटली के बीच की सीमा के पास ओट्ज़टल आल्प्स के एक ग्लेशियर में पाए जाने वाले **'ओट्ज़ी द आइसमैन' में 57 टैटू थे।**

कई एक्यूपंक्चर बिंदुओं पर या उसके पास स्थित थे जो आधुनिक बिंदुओं के साथ मेल खाते थे, जिनका उपयोग गठिया सहित उन बीमारियों के लक्षणों के इलाज के लिए किया जाएगा, जिनसे वह पीड़ित हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि ये टैटू प्रारंभिक प्रकार के एक्यूपंक्चर का संकेत देते हैं। हालाँकि यह ज्ञात नहीं है कि ओट्ज़ी के टैटू कैसे बने थे परंतु , वे कालिख के बने प्रतीत होते हैं।

टैटू के अन्य शुरुआती उदाहरण प्राचीन मिस्र के मध्य साम्राज्य काल में वापस खोजे जा सकते हैं। उस समय के आसपास (2160-1994 ईसा पूर्व) टैटू प्रदर्शित करने वाली कई ममियां (mummy) बरामद की गई हैं।

प्रारंभिक ग्रीक और रोमन काल (आठवीं से छठी शताब्दी ईसा पूर्व) में टैटू गुदवाने को बर्बर लोगों से जोड़ा गया था। यूनानियों ने फारसियों से टैटू बनवाना सीखा, और इसका इस्तेमाल गुलामों और अपराधियों को चिह्नित करने के लिए किया ताकि अगर वे भागने की कोशिश करें तो उनकी पहचान की जा सके। बदले में रोमनों ने यूनानियों से इस प्रथा को अपनाया।"

विश्व की विभिन्न जनजातियों की भांति छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत जनजातीय समदायों द्वारा भी गोदना के प्रति आशक्ति देखी जाती है। छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत विभिन्न जनजातीय समुदायों द्वारा भी पारंपरिक रुप से गोदना करवाया जाता है। राज्य के बस्तर क्षेत्र में निवासरत हल्बा, परजा, दोरला, गदबा, माड़िया, अबूझमाड़िया, मुरिया जनजाति, सरगुजा क्षेत्र की उरांव, नगेसिया, पांडो, कंवर आदि जनजाति एवं बिलासपुर संभाग की बैगा, भैना, गोड़, कोल आदि जनजाति समुदाय अपने शरीर के विभिन्न भागों पर पारम्परिक रुप से गोदना करवाती है।

गोदना कार्य

गोदना कार्य

राज्य में निवासरत अधिकांश जनजाति समुदायों केगोदना गुदाने की प्रथा प्रचलित है किन्तु वह जनजातियां स्वयं गोदना गोदने का कार्य नही करती है, किन्तु राज्य के कुछ क्षेत्रों एवं निकटवर्ती मध्यप्रदेश राज्य में ओझा गोंड जनजाति महिलाएं ग्रामों में घूम-घूमकर गोदना गोदने के कार्य में निपुण रही है। छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में गोदना गोदने का कार्य प्रायः देवार, भाट, बंजारा एवं मलार जाति की स्त्रियों द्वारा किया जाता है। यह समुदाय एक निश्चित माह या ऋतु विशेषकर शरद से शीत ऋतु में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में जाकर गोदना गोदने का कार्य करती है। सामान्यतः यह जाति समय विशेष में किसी ग्राम के बाहरी छोर पर डेरा डालकर कुछ समय के लिए निवास करती है और आस-पास के ग्रामों में गोदना हेतु जाती है। ग्रामीणों के द्वारा इन्हें **गोदियारिन** या गोदारी कहकर पुकारा जाता है।

जिला गरियाबंद मुख्यालय में मुख्य बसाहट से दूर खाली स्थान पर देवार जाति के 4-6 परिवार अपने अस्थायी झोपड़ी में निवास करते है। ये अस्थायी निवास पुराने कपड़ो, प्लास्टिक व कुछ लकड़ियों के द्वारा बनाये जाते है। लंबवत व गोल आकृति के बने घर दूर से ही पृथक नजर आते है। इन घरों में देवार जाति के परिवार सभी ऋतुओं में रहकर अपना जीवन यापन करते है। चूंकि यह आवास अस्थायी होते है अतः इनके क्षतिग्रस्त हो जाने पर ये इन्हें छोड़कर अन्य स्थानों में जाकर पुनः इसी प्रकार अस्थायी आवास बना लेते है। स्थानीयों द्वारा इनके घरों को डेरा भी कहा जाता है तथा इनके बसाहट को देवार डेरा, मलार डेरा आदि नामों से जाना जाता है। डेरा का स्थानीय भाषा में अर्थ लोगो द्वारा अस्थायी रुप रखने योग्य समूह की झोपड़ी से है।

इन्हीं डेरों में से एक झोपड़ी में **सबिना अपने पति सचदेव** तथा 03 बच्चों के साथ तथा एक अन्य झोपड़ी में मोना अपने पति गोरा और 4 बच्चों के साथ निवास करती है, जो गोदियारिन के रुप में विख्यात है परिवार की आजीविका चलाने के लिए इनके परिवार के पुरुष सदस्य कबाड़ी अर्थात् पुराने व टूटे-फूटे सामानों को घर-घर जाकर खरीदते है या एकत्र कर कबाड़ी वाले को बेच कर कुछ पैसे कमाते है। डेरा में रहने वाले इन्ही देवार जाति की महिलाओं के द्वारा परम्परागत रुप से गोदना गोदने का कार्य किया जाता है। इनके अनुसार पूर्व में गोदना इनका पारम्परिक व्यवसाय रहा है तथा जनजाति तथा गैर जनजाति समुदायों में गोदना प्रथा अत्यधिक प्रचलित थी जिससे इन्हें पर्याप्त आमदनी हो

THESE TATTOOS ARE ATTIRE FOR BHUNJIYA WOMEN

जाया करती थी। गोदना के कार्य के लिए शरद ऋतु उपर्युक्त हुआ करती थी। शरद ऋतु के प्रारंभ होते ही ये सह परिवार क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों में चले जाते थे। किसी ग्राम के बाहरी व खुले क्षेत्र में वे अपना अस्थायी डेरा बनाकर रहने लगते।

(सकारी सूजी)

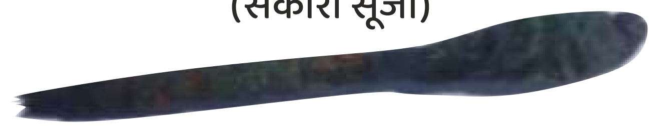

ग्रामों में जाने के बाद पुरुष सदस्य जहां अन्य आर्थिक संचय के कार्यों में संलग्न हो जाते वहीं महिला सदस्य अपने साथ गोदना कार्य में उपयोगी सूई जो सिलाई कार्य में उपयोगी होती है, को **"सकारी सुजी"** कहती है। सुईयों को 3 तथा 4 की संख्या में एक साथ व्यवस्थित रुप में बांधकर रखा जाता है। इनके द्वारा 3 सुईयों से फूल, पत्ते व अन्य आकृति और गोदना की बाह्य आकृति को बनाया जाता है। वहीं 4 सुईयों का समूह किसी बड़े आकार के गोदना एवं उसे पूर्ण रुप से भरने के काम आता है। उपयोगिता के आधार पर प्रायः इन्ही दो प्रकार की सुईयों का समूह ही गोदना हेतु उपर्युक्त होता है। इसके साथ-साथ **काजल, करगी काड़ी, टेहरा रंग, रुई** आदि सामान/उपकरणों को लेकर ग्राम में जाती है।

(करगी काड़ी)

कुछ गोदियारीन अपने साथ कभी-कभी शिशुओं को भी अपने कमर व कंधे में एक कपड़े से बांधकर भी लेकर जाती है। वहीं कुछ अपने साथ बालिकाओं तथा नव किशोरियों को भी अपने साथ गोदना कार्य में सहयोग तथा उन्हें गोदना कला को सिखाने के उद्देश्य से लेकर जाती है।

सबिना द्वारा जानकारी दी गई की प्रायः उनकी माताएं 5-6 वर्ष की कन्याओं को अपने साथ ही गोदना करने लेकर जाती है। यह कन्याएं अपनी माता को गोदना करते देखती है और उनका अनुशरण करती है, कि किस प्रकार से गोदना कार्य का प्रारंभ किया जाता है, उसकी रुपरेखा तैयार करना तथा सुई को पकड़ने और उसे शरीर पर किस प्रकार से चुभाना है। यह ज्ञान कन्या को उसकी माता के अवलोकन से तथा माता के द्वारा समय-समय पर सीख देने से प्राप्त होता रहता है। कन्या के 9-10 वर्ष की आयु में गोदियारीन अपनी कन्या को गोदना करते समय बड़े आकार

के गोदना की बाह्य आकृति बना कर देती है जिसके मध्य भाग को कन्या को भरने का सर्वप्रथम प्रशिक्षण देती है, जिससे आकृति में कोई बदलाव न आये। इस प्रकार धीरे-धीरे वह उसे मूल आकृति बनाने की कला चरणबद्ध रूप से सिखाती है। इस कार्य में कुछ वर्ष हो जाने पर तथा कन्या में **''मां के सांच''** आने अर्थात् **अपनी माता के समान गोदना गोदने की कला में निपूण हो जाने** पर वह स्वतंत्र रूप से गोदना करने लगती है और फिर अपने भावी पीढ़ी को भी अपना ज्ञान इसी प्रकार प्रदान करती है।

गोदियारीन के ग्राम में घूमने पर गोदना कराने जनजाति व गैर जनजाति महिलाओं द्वारा उससे संपर्क किया जाता है। गोदियारीन द्वारा परम्परागत रूप से सर्वप्रथम गोदना गुदवाने वाली कन्या/स्त्री की जाति पूछी जाती है। जाति के आधार पर वह अपने पास रखी पंजी से उक्त जाति में प्रचलित गोदना कन्या या स्त्री के शरीर पर उकेरती है। जनजातीय समुदायों में गोदना एक स्थायी आभूषण है जिसे वह अपने पिता के घर से लेकर अपने ससुराल जाती है। अतः इन समाजों में कन्या के विवाह के पूर्व किया जाना अनिवार्य होता है इस कारण इनमें यह मान्यता है कि, कन्या को विवाह के समय पिता के द्वारा अनेक भौतिक वस्तुएं प्रदान की जाती है किन्तु माता के पास कन्या को देने के लिए कुछ नही होता है। इसकी पूर्ति माता कन्या को अपने मातृपक्ष से मिले गोदना की आकृति के समान या हू-ब-हू वही गोदना या उसके कुछ अंश को कन्या उसके शरीर पर गुदवाकर उसे अपनी ओर से अलंकृत करती है। जो स्थायी आभूषण के रूप में उसके शरीर के सौंदर्य को बढ़ाता है। इस प्रकार एक ही प्रकार के गोदना की आकृति की पीढ़ी दर पीढ़ी पुनर्रावृत्ति होती है। कालांतर में यह पुनर्रावृत्ति किसी जाति विशेष में अनिवार्य रुप से परिलक्षित या दिखने लगती है। जिस कारण एक गोदना जाति विशेष का परिचारक भी बन जाता है।

गोदना गोदने की प्रक्रिया में गोदियारीन सबसे पहले कन्या से उसकी रुचि अनुसार गोदना की आकृतियों का चुनाव करवाती है। जो उसके द्वारा गोदना की पंजी में दर्शायी गई होती है। ये आकृतियां बिन्दु, रेखीय, फूल, वृक्ष, पत्ते, धार्मिक जीवन, वस्तु आदि पर आधारित होती है। किन्तु

माता के कन्या के द्वारा पसंद की गई आकृति के अतिरिक्त माता अपने शरीर में गुदवाये गोदनों की कुछ आकृतियां सर्वप्रथम बनाने को कहती है।

गोदियारीन गोदना गोदने के पूर्व किसी घर से चिमनी के धुंए से दीवार या छत पर जमी काली परत जिसे स्थानीय भाषा में **केरुवस** कहा जाता है मांग कर ले लेती है।कुछ घरों में गोदना कार्य के लिए विशेष रुप से घी के दिए से केरुवस बनाया जाता है जिसे एक खपरेल में एकत्र किया जाता है। इस **केरुवस** में वे अपने साथ लाये **टेहरा रंग** (सामान्यतः जिसका प्रयोग घर की पोताई में नीला रंग लाने में किया जाता है) को पानी में मिलाकर एक घोल बनाती है।

गोदियारीन कन्या के द्वारा पसंद किये गये गोदना की आकृति को करगी काड़ी (बंास या झाड़ू की पतली लकड़ी) और घोल से तैयार करती है। जिसके लिए वह करगी काड़ी को बार-बार घोल में डुबाकर बाह्य आकृति (व्रजसपदम) कन्या के अंग पर उकेरती है। यह आकृति काले-नीले रंग की दिखाई पड़ती है। जिससे गोदना किया जाना सरल हो जाता है। आकृति बनने के बाद गोदियारीन एक हाथ से कन्या के हाथ को या उस अंग को खींचकर पकड़ती है जिससे त्वचा स्पष्ट रुप से दिखती रहे। इसके बाद गोदियारीन उकेरी गई आकृति में सर्वप्रथम 3 सुई की सहायता से कन्या की त्वचा के बाहरी सतह पर सुईयों को बार-बार गड़ाती है और फिर उन्हें काजर घोल में डुबाती है और पुनः त्वचा पर गड़ाती

है। इस प्रक्रिया को बार-बार दुहराते हुए उकेरे गये आकृति पर सुई को चुभाया जाता है। एक बार बाह्य आकृति बन जाने के बाद गोदियारीन उन आकृतियों को भरने या गहरा करने के लिए तथा बांहा और पहुंचा बनाने के लिए 4 नग की सुई का उपयोग करती है, जिसे वो इस प्रकार त्वचा पर चुभाती या गड़ाती है। बार-बार सुई के गड़ने से त्वचा सूज जाती है और कभी-कभी उनसे रक्त भी आ जाता है।

आकृति पूर्ण हो जाने के बाद गोदियारीन कन्या के घर से हल्दी और तेल (तिल तेल या फल्ली तेल) मंगाती है। हल्दी और तेल को एक साथ मिलाकर वह उसे गोदना किये गये स्थान पर लेप के रूप में हाथों से लगाती है। यह एक प्रकार से मरहम का कार्य करता है। इसके बाद वह कन्या अथवा उसके परिजनों से **चांवल, दाल, हल्दी, मिर्च, नमक, कोचई और हिरवा** मांगती है और इस सामग्री को कन्या के सिर से पैर तक 7 बार उतारती है। जिसे **तेर-हरदी उतारना** कहा जाता है। इनकी मान्यता है कि ऐसा करने से सुई से हुए हाव तथा चुभन से हुई पीढ़ी जल्द कम हो जायेगी और किसी प्रकार से कोई संक्रमण गोदना से उत्पन्न नही होगा।

तेर-हरदी उतरने के बाद गोदियारीन को उसके पारिश्रमिक के रुप में रुपया, चांवल, दाल व अन्य कोई सामाग्री दी जाती है। इस प्रकार गोदियारीन भी कन्या के उत्तम स्वास्थ्य और भावी जीवन की मंगल कामना कर उसकी नजर उतारती है।

वर्तमान में गोदियारीन अपने द्वारा किये गये गोदना के पारिश्रमिक के रुप में नगद राशि ही लेती है। इनके द्वारा एक फूल 50 से 100 रुपये, हथारी पर गोदना अर्थात हाथ के पंजे पर गोदना के 40 रुपये, बांहा के गोदना के 1000 रुपये लिये जाते है। वहीं हाथ के बांह, कलाई, हथेली के उपरी भाग, पैर पर घुटनों के नीचे व पंजो पर सम्मिलित रुप से गोदना करने पर 2000-3000 रुपये लिये जाते है। गोदियारीन द्वारा जाति विशेष का गोदना सामान्यतः दूसरी जाति की कन्या के शरीर पर नही बनाया जाता है। इस प्रकार एक गोदना की आकृति एक जातिसूचक भी बन जाती है। महिलाओं के गोदना जहां एक ओर सुन्दरता के प्रतीक है वही यह भी दर्शाते है कि पड़ोसी जनजातियों का उनके बीच प्रत्यक्ष संपर्क नही है।

गोदियारिन का गोदना

गोदयारिन की गोदना पंजी

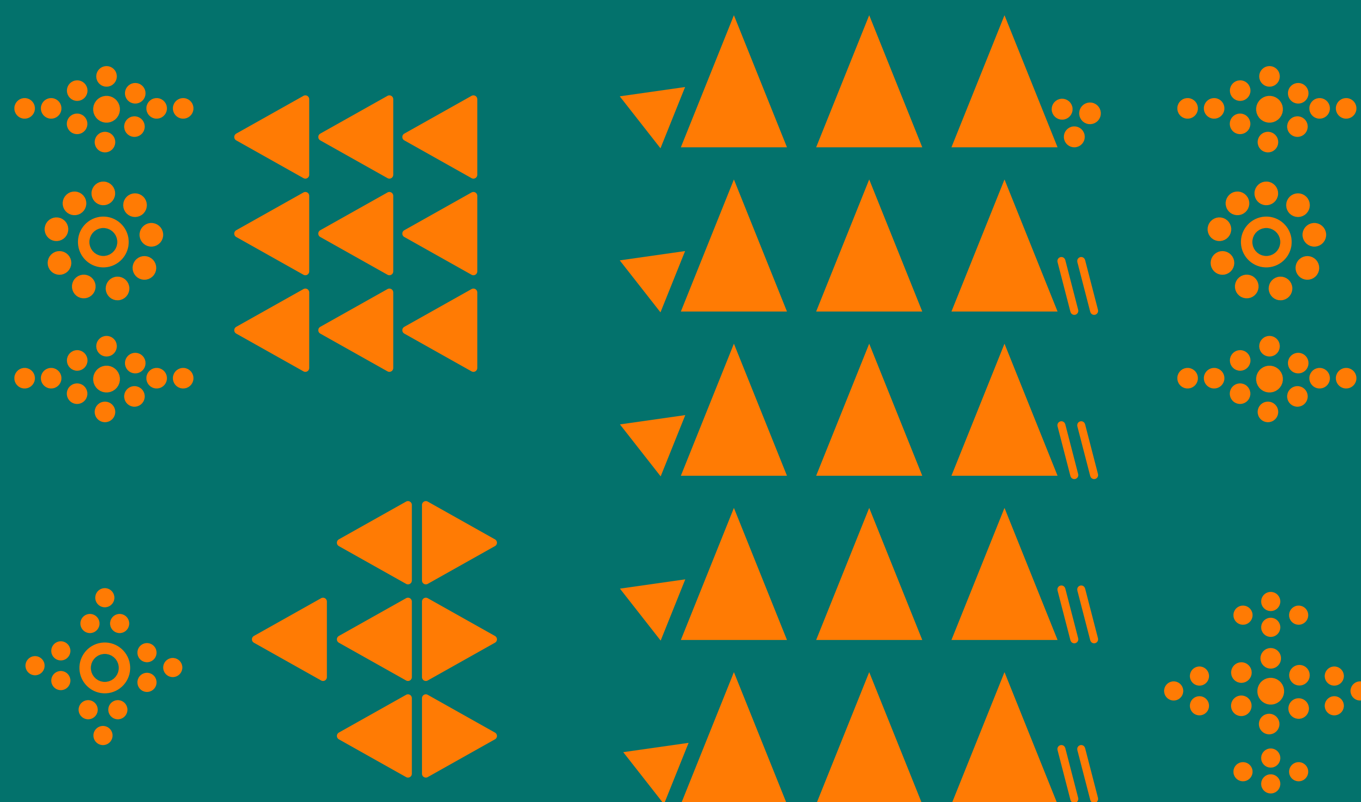

गोदयारिन की गोदना पंजी

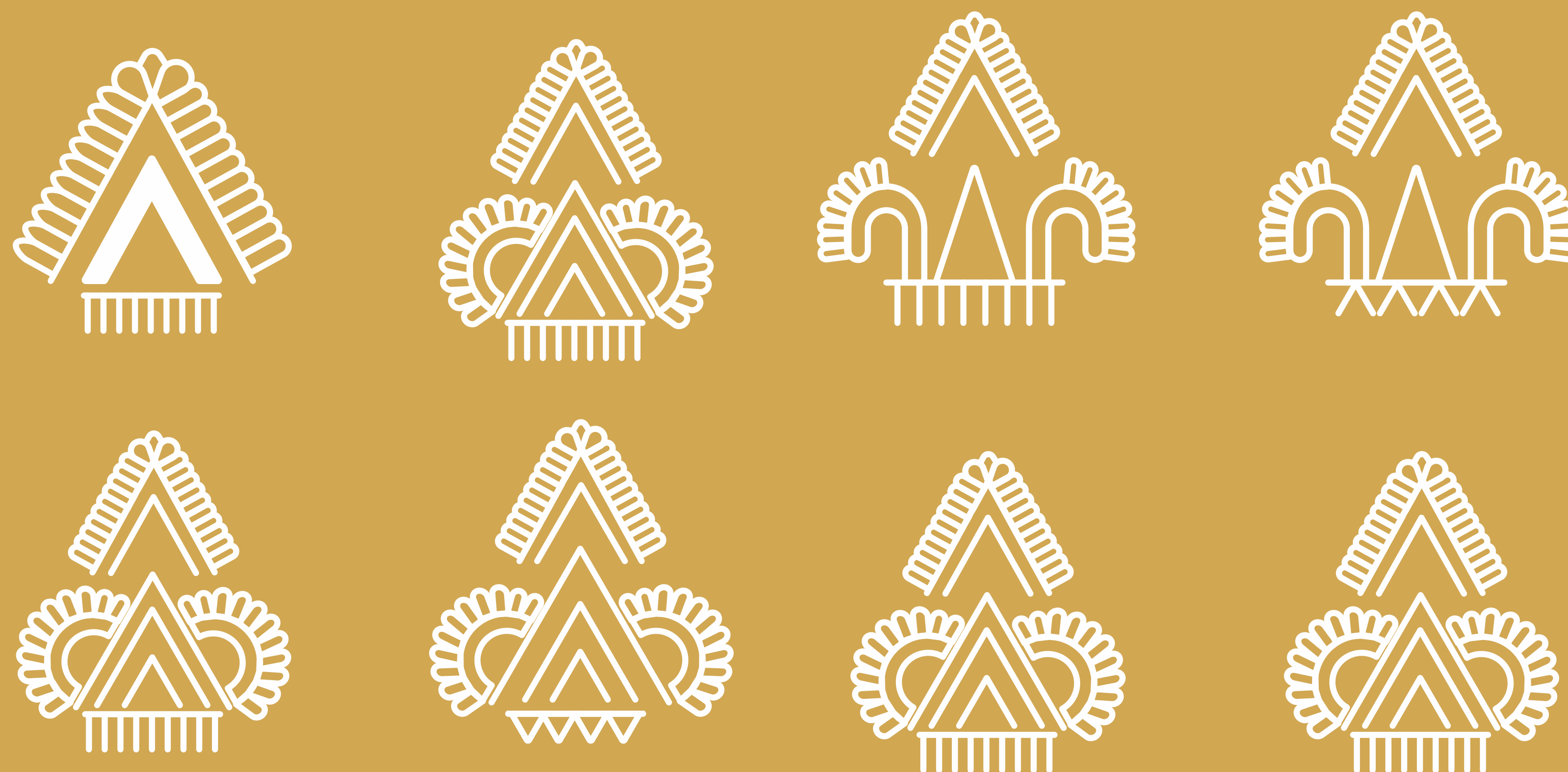

गोदयारिन की गोदना पंजी

गोदयारिन की गोदना पंजी

भुंजिया गोदना

गोदयारिन की गोदना पंजी

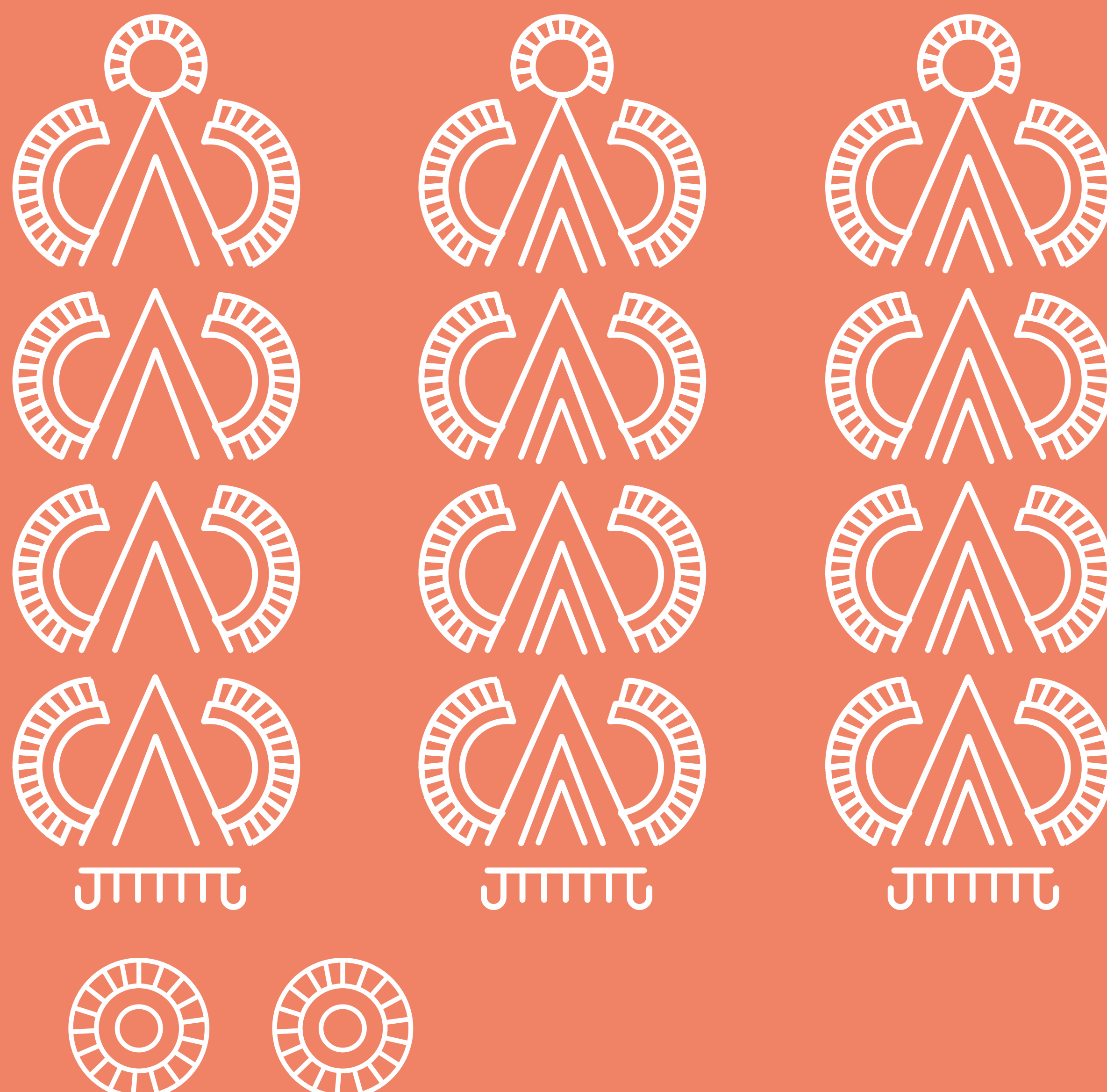

चिकित्सकीय पहलू

गोदना के चिकित्सकीय पहलू

आधूनिक चिकित्सा या परम्परागत चिकित्सा में नाड़ी विज्ञान या नाड़ी ज्ञान की पद्धति प्रचलित है। इनके मनुष्य की नाड़ी (धमनियों) में रक्त के दाब के संचालन के आधार पर बीमारी या व्याधियों का अनुमान लगाया जाता है या सुईदाब Acupressure चिकित्सा पद्धति में मनुष्य के शरीर के कई ऐसे बिन्दु जिनके माध्यम से शरीर के भीतर के विभिन्न अंग जैसे हृदय, फेफड़े, किडनी आदि के असामान्य व्यवहार को नियंत्रित किये जाने के प्रमाण दिये जाते है। उसी प्रकार गोदना भी शरीर के विशेष अंगो या स्थानों पर ही किये जाते है जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शारीरिक विकार की अवस्था को दूर किये जाने की अवधारणा जनजातीय समुदायों में प्रचलित है।

चिकित्सा पद्धति में सुईदाब बिन्दु (Acupressure points in medicine)

चेहरे के बिन्दु -

मानव शरीर में चेहरे के क्षेत्र में माथे के मध्य या दोनों भौं के मध्य का भाग जिसे Sometometry भाषा में Glabella कहा जाता है, इस स्थान को तीसरी आंख का स्थान भी कहा जाता है। Facial acupressure points के रूप में इसे Yintang भी कहा जाता है। इस स्थान पर चिकित्सकीय रूप से चिंता कम करने तथा नींद या निद्रा में सुधार के लिए के लिए दबाव दिया जाता है।

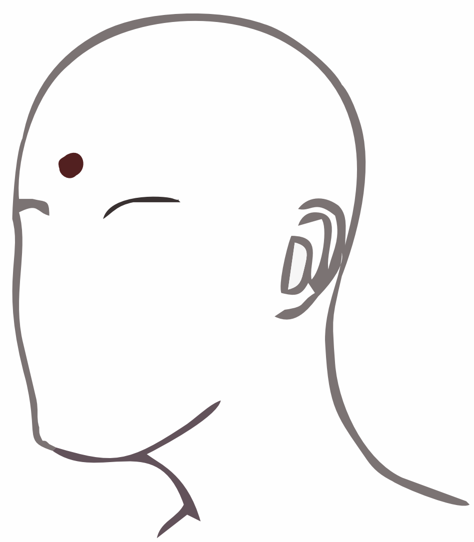

नासिका के बिन्दु -

इसी प्रकार नासिका के भाग को Sometometry में Nasion (n) कहा जाता है यह एक बिन्दु है जहां ललाट की हड्डी नाक की जड़ से मिलती है, यह बिन्दु एक जीवति शरीर पर प्रत्यक्ष रुप से नही देखी जा सकती है इसे केवल उंगलियों के माध्यम की भाषा में इसे LI20 नाम दिया गया है। इस बिन्दु पर दबाव से नासिक मार्ग को साफ करना या श्वास संबंधी परेशनियों के उपचार तथा नासिका में खुजली जैसी अन्य परेशानियों से निज़ाद के रुप में उपचार किया जाता है।

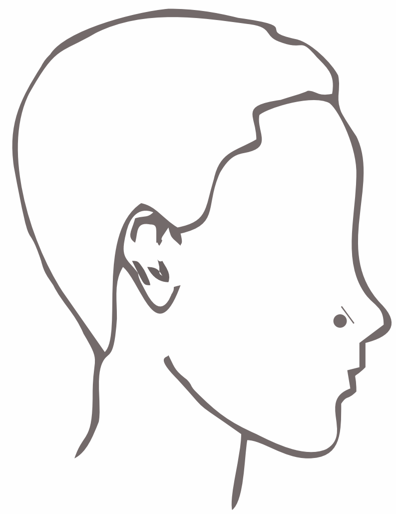

हथेली के बिन्दु -

चिकित्सकों का मानना है कि, Acupressure points के रुप में हाथ की **घाटी बिन्दु** **Valley point** हाथ के अंगुठे और प्रथम उंगली के मध्य के स्थान पर दबाव डालने से तनाव कम होना, दर्द में कमी आना तथा माइग्रेन जैसे विकार को दूर किया जा सकता है साथ ही इस क्षेत्र मे दबाव बनाने से कंधे व गरदन के दर्द का उपचार भी किया जा सकता है।

हाथ या बांह के बिन्दु -

चिकित्सकीय रुप से हथेली और बांह के मध्य के भाग को Outer gate point कहा जाता है। दाब पद्धति का मानना है कि इस स्थान पर दाब (Pressure) डालने से व्यक्ति की ऊर्जा बढ़ती है और प्रतिरक्षा प्रणाली में वृद्धि आती है।

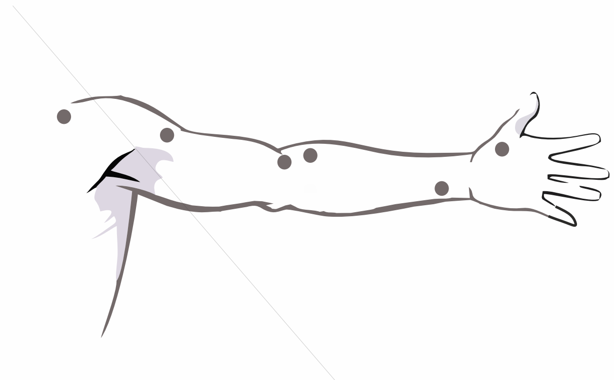

पैर के बिन्दु -

दाब पद्धति में पैर के निचले भाग अर्थात ऐड़ी के ऊपर के भाग को एक मुख्य बिन्दु माना जाता है जिसे SP6 कहा जाता है। इसे अंग्रेजी भाषा में "Three Yin Intersection" नाम दिया गया है। यह बिन्दु प्लीहा, गुर्दा और यकृत की रेखा को पार करता है, जिससे इन तीन अंगों से जुड़ी पाचन, स्त्री रोग और भावनात्मक स्थिति का उपचार दाब (Pressure) से किया जाता है।

Source : &https://www.medicalnewstoday.com/articles/324699

भुँजिया गोदना

भुंजिया जनजाति में गोदना

राज्य की भुंजिया जनजाति में गोदना करवाना अनिवार्य प्रथा है। इनमें महिलाओं द्वारा ही विशेष रुप से अपने शरीर पर गोदना करवाया जाता है। भुंजिया जनजाति में गोदना कन्या के विवाह पूर्व गोदना किया जाता है। कन्या के 6 से 12 वर्ष की आयु में गोदना किया जाना शुभ माना जाता है। इस उम्र में भुंजिया जनजाति की बालिकाओं के **ललाट (माथा), नाक के बांए भाग, एवं ठुड्डी में गोदना अनिवार्य रुप से गुवाया जाता है जिसे मुंहमुठकी कहा जाता है।** मुंहमुठकी में गुदवाये गये गोदने बिन्दू के रुप में छोटे आकार के होते है। जो मात्र एक संकेत के रुप में किये जाते है कि अमुख कन्या का मुंहमुठकी हो चुका है। इनमें मान्यता है कि मुंहमुठकी के बीना कन्या का विवाह नही किया जा सकता क्योंकि यह श्रृंगार (गोदना) ही कन्या के साथ हमेशा रहेगा। कन्या के 12 वर्ष की आयु के बाद इनके शरीर के अन्य भागों में बड़े आकार की आकृति के रुप में गोदना गुदवाये जाते है।

भुंजिया जनजाति में गोदना के प्रति अवधारणा या मान्यताएं -

अन्य समाजों के भांति भुंजिया जनजाति में गोदना केवल एक आकृति या कलाकृति नही है। गोदना इनके सामाजिक संस्कारों का एक पहलू भी है। जिससे इनके सांस्कृतिक प्रतिमान जुड़े हुए है। भुंजिया जनजाति में गोदना के प्रति प्रचतिल मुख्य अवधारणाओं या मान्यताओं को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है -

1. भौतिक आधार

भुंजिया जनजाति में गोदना को स्त्रियों का स्थायी आभूषण माना जाता है। इनमें न केवल गोदना को स्त्रियों के अंगों में धारण किये जाने वाले आभूषणों के स्थान व प्रकार के आधार पर बनवाया जाता है। अपितु अंगों पर बनवाये जाने वाले गोदना को प्रयोग किये जाने वाले आभूषणों के नाम से भी परिभाषित किया जाता है। जैसे - नाक के गोदना को नथनी, भुजा के गोदना को नागमोरी, कलाई की चूरी या ऐंठी, पैर के गोदना को पैरी एवं पैर की उंगलियों के गोदना को बिछिया कहा जाता है। इस प्रकार गोदना भुंजिया जनजाति में भौतिक अलंकरण का प्रतिकात्मक रुप माना जाता है। जो उनके विभिन्न अंगो को श्रृंगार के संसाधनों की अनुपलब्धता में भी अलंकृत कर श्रृंगार को दर्शाता है।

2. सामाजिक आधार

भुंजिया जनजाति में गोदना का सामाजिक आधार भी मान्य है। भुंजिया जनजाति में कन्या के मुंहमुठकी के बिना विवाह संस्कार नही किया जाता है तथा पूर्व समय में युवावस्था में प्रवेश करने पर कन्या शरीर के विभिन्न अंगों पर गोदना करवा दिया जाता था, विवाहोपरांत उसके गोदना को माता के द्वारा दिया गया स्थायी दहेज भी माना जाता था। कन्या के विवाह के पूर्ण गोदना न होने पर उसके ससुराल में गोदना किया जाता था और एक प्रकार से ताना दिया जाता था कि,

"तोर हरदी ला भी खरीद डालेन।
तोर दाई-ददा अतना भी नही सकेन का॥ "

अर्थात कन्या के पितृ पक्ष के आर्थिक रुप से कमजोर होने पर उसके ससुराल में गोदना किया जाता है जिसका मूल्य देकर वे कन्या के पितृ पक्ष के दायित्व को भी निभाने का आशय व्यक्त करते है।

3. धार्मिक आधार

भुंजिया जनजाति में धार्मिक आधार या मान्यता के अनुरूप भी आकृतियां गोदना के रूप में देखने को मिलती है। मध्य क्षेत्र में निवासरत भुंजिया जनजाति में इस प्रकार की आकृति कम दिखाई देती है किन्तु धार्मिक आधार की यह गोदना कृतियां सीमावर्ती राज्य उड़ीसा में निवासरत अथवा सीमावर्ती क्षेत्रों में निवासरत भुंजिया जनजाति की महिलाओ में अधिकता में देखने को मिलता है।

जिसमें शंख (Conch shell), सुदर्शन चक्र, देवी के मुकुट (Goddess's Crown), पादुका (Foot), प्रतिमा (Statue), मंदिर (Temple), धनुष-बाण (Bow and Arrow) तथा प्रख्यात मंदिरों की छवि आदि सम्मिलित होती है।

4. प्रकृति/सौर मण्डल संबद्ध

जनजातीय गोदना में एक विशेषता यह भी है कि, महिलाओं के अंगों पर किये जाने वाले गोदना चिन्हों में सूर्य (Sun), चन्द्रमा (Moon) तथा तारे (Star) को भी अपनी कल्पना के अनुसार बिन्दु, गोलाकार, अर्द्धगोकार और रेखीय रुप में गढ़ने की कोशिश की जाती है, जिससे वे स्वयं को प्रकृति के और अधिक समीप व जुड़े होने का अनुभव करते है।

5. आत्मावाद संबंधी

भुंजिया समुदाय आत्मावादी विचारधारा को मान्यता देता है। इनमें जहां एक ओर परिवार के सदस्य की मृत्यु उपरांत उन्हें डूमा-पितर के रुप में स्थान दिया जाता है वहीं गोदना के संबंध में माना जाता है कि महिलाओं की मृत्यु उपरांत जब वे यमराज के घर जाती है तो उन्हें गोदना के माध्यम से अपने कुल या वंश की निशानी दिखानी पड़ती है और मृत्यु पूर्व यदि उनके शरीर में गोदना नही होता है तो यमराज द्वारा उनकी आत्मा को गर्म सब्बल से दाग कर दण्ड दिया जाता है। अतः इनमें मृत्यु उपरांत एक काल्पनिक जीवन के प्रति अपनी आशक्ति या भाव को प्रदर्शित करता है।

6. पूर्नजन्म संबंधी

आत्मावादी अवधारणा का संबंध ही पूर्नजन्म की अवधारणा को जन्म देता है भुंजिया जनजाति में माना जाता है कि, श्मशान में मृत जनों का भी समाज होता है जहां जिस महिला के शरीर में गोदना न हो उसे अपने समाज में नही मिलाते इस स्थिति में उसकी आत्मा शांति नही पाती है और अगले जन्म मे मानवयोनी न पाकर पशु-पक्षी के रुप में जन्म लेती है। इसलिए गोदना करवाना अनिवार्य माना जाता है ताकि पुर्नजन्म में उसे वही परिवार या वंश ही प्राप्त हो।

7. जातिगत आधार

भुंजिया जनजाति में पारंपरिक रुप से गुदवाये गये गोदना की आकृतियां या चिन्ह अन्य समुदाय के गोदना से पृथक ही दृष्टिगत होते है जिससे भुंजिया जनजाति की महिला को अन्य समुदाय से दूर से ही पृथक जान पड़ते है। भुंजिया जनजाति द्वारा उनके शरीर पर किये गये गोदना को सरलता से पहचाना जा सकता है। अतः भुंजिया जनजाति में महिलाओं में गोदना से उनकी पहचान भी की जा सकती है कि उक्त महिला भुंजिया जनजाति से है।

8. आर्थिक प्रास्थितिक आधार

महिलाओं के पूरे शरीर पर गोदना करवाने का खर्च ज्यादा होता है। इस कारण पूर्व समय में यह मान्यता थी कि, जिस कन्या के शरीर पर ज्यादा मात्रा में गोदना होता था उसे व उसके परिवार को अधिक सम्पन्न माना जाता था। जिसके कारण भी गोदना को शरीर के ज्यादातर अंगों में व बड़े आकार में कराया जाता था।

9. चिकित्सा संबंधी

भुंजिया जनजाति में चिकित्सकीय रुप या शारीरिक स्वस्थता के रुप में गोदना कराया जाता है जिसके आधार पर कुछ उदाहरण निम्न है -

(अ) भुंजिया जनजाति में गोदना को चिकित्सकीय रुप में भी उपयोग किया जाता है। इनमें मान्यता है कि यदि कोई शिशु अपने चलने की आयु में ठीक से चल नही पाता है तो उसके कमर एवं पैर में गोदना करने पर उसकी अस्वस्था ठीक हो जाती है।

(ब) वहीं यदि कोई व्यक्ति लकवा (Paralysis) से पीड़ित हो तब भी उसके लकवाग्रस्त भाग के जोड़ों में गोदना किया जाता है।

(स) महिलाओं के शरीर के जोड़ (Women's body joints) मजबूत रहे इस कारण भी उनके अंगों के जोड़ के स्थानों पर गोदना गुदवाया जाता है।

10. भावनात्मक आधार

विवाह के बाद कन्या जब अपने ससुराल में अकेले रहती है तब उसे अपने मायके की याद आती है इस समय वह अपने गोदना को देखती है और उन्हें अपने पास होने का अनुभव करती है। इस प्रकार गोदना माता एवं पुत्री के स्नेह तथा पुत्री के साथ उसके मायके के भावनात्मक संबंधों का भी परिचायक है।

भुंजिया जनजाति में उपरोक्त मान्यताएं या अवधारणाएं वर्तमान में भी विद्यमान है। जिस के कारण आज भी भुंजिया समुदाय में कन्याओं के बाल्यावस्था में **मुहमुठकी** के रुप अनिवार्यतः गोदना गुदवाया जाता है। वर्तमान में जब भी गोदयारिन ग्राम में आती है ग्राम की बालिकाओं को गोदना किया जाता है। आषाढ़ से भादो माह (अगस्त से अक्टूबर) माह का समय गोदयारिनों के ग्रामों में आने का होता है। गोदयारिन के आने पर बालिकाओं को गोदना कराने उसके पास लेकर जाते है। गोदयारिन सर्वप्रथम उस बालिका से उसकी जाति पूछती है। बालिका की जाति ज्ञात हो जाने पर वह अपने पास रखे एक पंजी से उस बालिका की जाति अनुसार गोदना उसे दिखाती है। गोदयारिन के पास पृथक-पृथक जाति में प्रचलित गोदना की कलाकृति पंजी में अंकित की गई रहती है जिसके अनुसार वह राशि परिवार को बताती है। चूंकि गोदयारिनों द्वारा परम्परागत रुप से जनजातीय समुदायों में गोदना किया जाता है अतःएव ये गोदे जाने वाले गोदना की आकृति को पंजी में अंकित कर रखते है।

कई बार इनके पास पंजी उपलब्ध न होने की स्थिति में गोदयारिन उसकी माता या परिवार के किसी भी महिला सदस्य में गोदे गये गोदने को देखकर भी गोदना करती है। परिवार की ईच्छानुसार यदि केवल मुंहमुठकी की जानी है तो गोदयारिन भुंजिया जाति के अनुसार उसके चेहरे के भृकुटि (माथा/ललाट (Forehead/ Brow), नाक (Nose) एवं ठुड्डी (Chin) में गोदना करती है। भुंजिया जनजाति के अनुसार भृकुटि में किये गये गोदना को बिंदी, नाक में किये गये गोदना को नथनी एवं ठुड्डी के गोदने को मुठकी कहा जाता है इस प्रकार चेहरे पर किये गये इन गोदना को एक साथ मुंहमुठकी कहा जाता है। भुंजिया जनजाति में मुंहमुठकी में आने वाला व्यय कन्या के मातृपक्ष (माता अथवा माता के भाई की पत्नी "मामी") के द्वारा ही वहन किया जाता है।

भुंजिया जनजाति में महिलाओं के चेहरे पर मुंहमुठकी के अतिरिक्त अन्य कोई गोदना नही किया जाता है। कन्या के युवावस्था में पहुंचने पर उसके अन्य अंगों जैसे बांह, भुजा, कलाई, पंजा, पैर में घुठने के नीचे, एड़ी के उपर, एवं पैर के पजों व उसकी उंगलियों में गोदना कराया जाता है।

गोदयारिन द्वारा गोदना किये जाने पर कन्या को पीड़ा होती है, पीड़ा में कन्या द्वारा गोदयारिन को और गोदयारिन द्वारा कन्या को कहा जाता है -

नई पीरावय नोनी तै हा काबर रोथे।
टर वा दई नई जानस तैं हा अबड़ पीरा होथे।।
ऐ दाई झन गोद ना वों... ।।।

इस पर गोदयारिन पुनः उसे पुचकारती है और गोदना गुदवाने के लिए मनाते हुए कहती है..

शकारी वाला सूची ये
नई जनावय वो,
गुदना गोदाले....।।

अर्थात् : यह गोदना वर्तमान में उपलब्ध सरकारी (व्यावसायिक) रुप से मिलने वाली सुई है। इससे गोदना गुदवाने में पूर्व समय में कांटों की सहायता से गोदे जाने वाले गोदने की अपेक्षा कम पीड़ा होगी। तो तुम इस सुई से गोदना गुदवाने से न डरते हुए गोदना गुदवालो।
इसी प्रकार गोदयारिन बार-बार कन्या को गोदना गुदवाने के लिए प्रलोभन देती है और कन्या को गोदना करवाने के लिए मनाने के जतन भी करती है। पुनः गोदयारिन अपनी बोली में कन्या को दुलारते हुए कहती है -

झन रो ए मोर दुलारिन नोनी, तोला दूध-भात देहां...

गोदना गोदने के पारिश्रमिक के रुप में गोदयारिन को चांवल, दाल एवं नगद राशि दी जाती है तथा मुंहमुठकी करने पर गोदयारिन कन्या के गोदना के समय पहने कपड़े भी उनके माता-पिता से मांगकर ले जाती है। भुंजिया जनजाति द्वारा भी सहर्ष कन्या के कपड़े उसे दे दिये जाते है। कभी - कभी गोदयारिन द्वारा बालिकाओं को कहा जाता है -

"चिरहा कपड़ा ला पहिन के आवत हो दाई..
बने असन ला पहिन बे ता हमो मन दू दिन पहिन लेबो"

अर्थात गोदयारिन बालिकाओं के पुराने कपड़े पहन कर गोदना गोदवाने आने पर उनसे कहती है कि, फटे कपड़े पहन कर आयी हो बेटी, थोड़े अच्छे पहन कर आती तो ये कुछ दिन हमारे बच्चों के पहनने के काम भी आ जाते।

गोदना गोदने के बाद कन्या के गोदना के स्थान पर सूजन या दर्द न हो इसके लिए गोदयारिन गोदना किये गये भाग या स्थानपर **तेल-हल्दी का लेप** लगाकर उसे कपड़े से रगड़ कर पोंछती है। **जिसे बिस उतारना कहा जाता है**। इसके लिए कन्या के परिवार द्वारा गोदयारिन को मिर्ची, चांवल, नमक दिया जाता है, माना जाता है बिस उतारने से कन्या को भविष्य में गोदना से पीड़ा या कोई कष्ट उत्पन्न नही होती है।
गोदना कार्य पूर्ण हो जाने के बाद गोदयारिन **"थुवा"** टोटका के रुप में सभी सामग्री लेकर कन्या के सिर से पैर तक छुआती है और मन ही मन अपने द्वारा किये गये गोदना से कहती है...

ऐ सूजी, काजर के गोदना ।
निजर ककरो झन लगे..
तै बगबग ले उबक जा ।।

अर्थात् ऐ सूई और काजर से बने गोदना इस कन्या को और मेरे व्यवसाय को किसी की बुरी नजर न लग जाये इस कारण से तुम स्पष्ट रुप से गाढ़े काले रंग में दृष्टिगत हो जाना।

नई पीरावय नोनी तै हा काबर रोथे।
टर वा दई नई जानस तैं हा अबड़ पीरा होथे।।
ऐ दाई झन गोद ना वों... ।।।

शकारी वाला सूची ये
नई जनावय वो,
गुदना गोदाले....।।

झन रो ए मोर दुलारिन नोनी, तोला दूध-भात देहां...

"चिरहा कपड़ा ला पहिन के आवत हो दाई..
बने असन ला पहिन बे ता हमो मन दू दिन पहिन लेबो"

ऐ सूजी, काजर के गोदना ।
निजर ककरो झन लगे..
तै बगबग ले उबक जा ।।

भुंजिया गोदना

THE TATTOOS OF BHUNJIYA TRIBE

भुंजिया जनजाति में गोदना के प्रकार या आकृतियां

सामान्यतः गोदना करने की प्रक्रिया में बिन्दु, रेखीय, गोलाकार व अर्द्धगोलाकार आकृति, त्रिभुजाकार ज्यामितीय संरचनाएं ही उकेरी जाती है तथा इन्ही संरचनाओं को एक या एक से अधिक संख्या मे उकेरा जाता है फलस्वरुप आकृतियों का समावेश एक विशिष्ट आकृति का सृजन करती है, जो कालांतर में किसी जाति विशेष में हू-ब-हू या एकरुपता के रुप में दिखाई देने लगती है। भुंजिया जनजाति में प्रचलित गोदना आकृतियों का विवरण निम्नांकित है -

1. टिपका

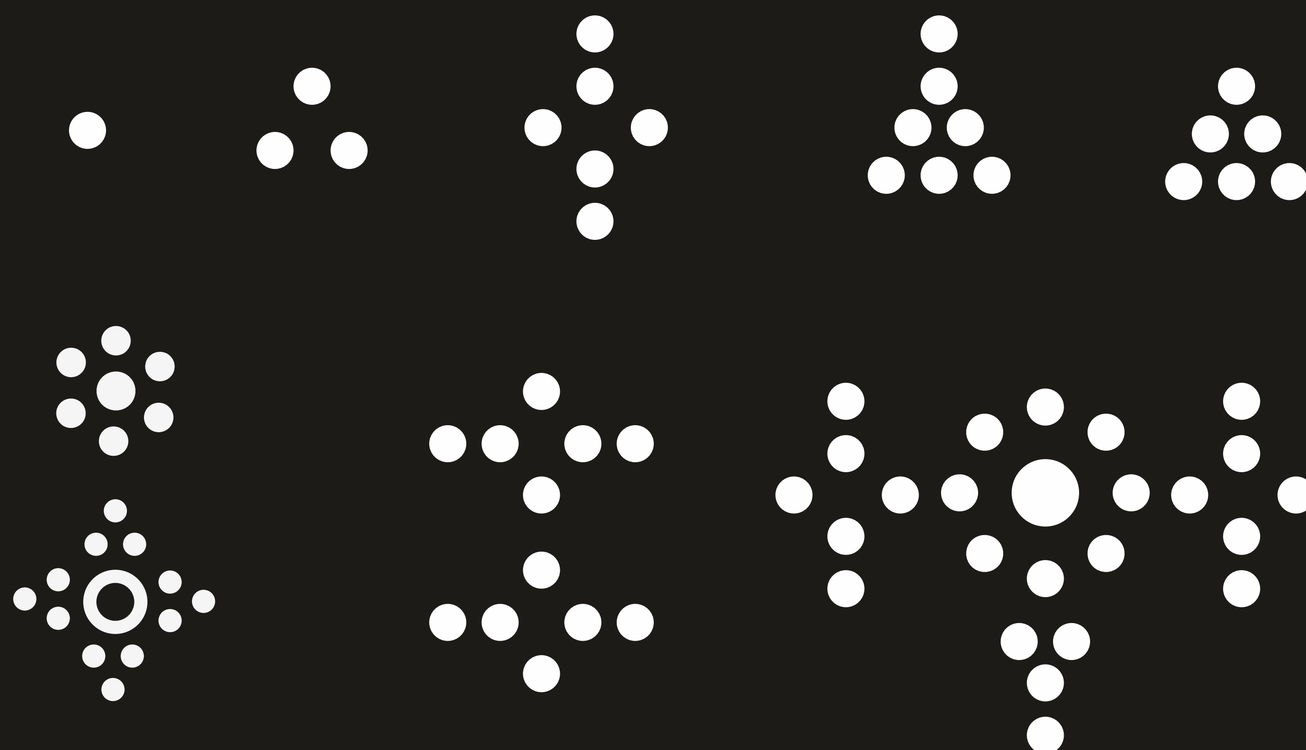

स्थानीय भाषा में टिपका का शाब्दिक अर्थ बिन्दु (Dot) से होता है। गोदना में जब केवल एक ही बिन्दु या एक से अधिक बिन्दुओं को मिलाकार आकृति बनाई जाती है तो इन्हें टिपका कहा जाता है।

2. डण्डी

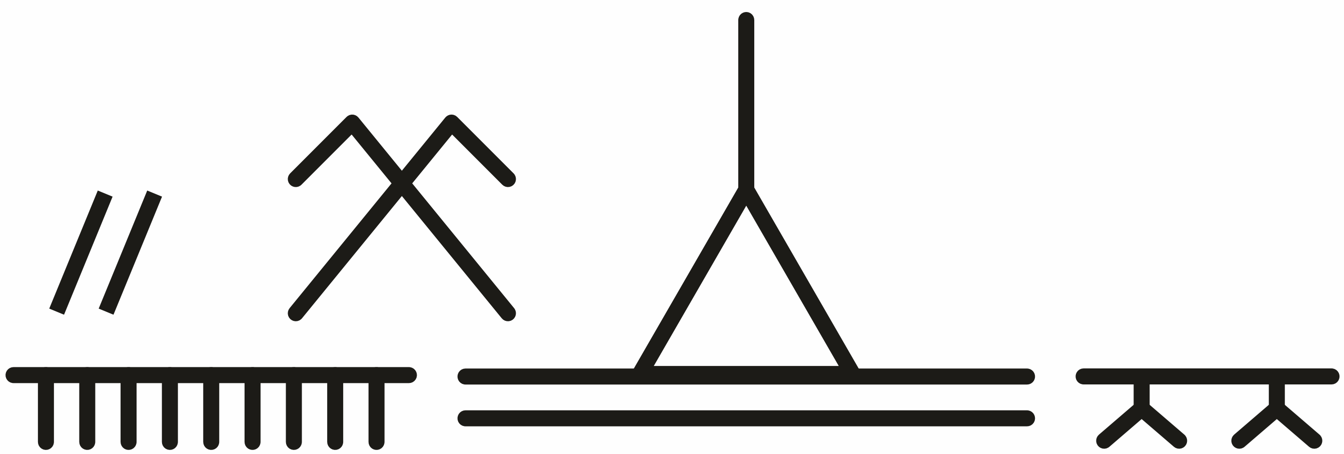

डण्डी या डांड़ का तात्पर्य एक सीधी रेखा के रूप में निरुपित करने से है। भुंजिया जाति के गोदना में कई आकृतियां ऐसी भी पायी जाती है जिने शुरुवात, अंत, उपर या नीचे के भाग में उर्द्धवाधर या क्षैतिज रेखाएं खिंची जाती है। यह ऐसा जान पड़ता है मानो किसी आकृति को विशेष रुप से दिखाने का प्रयास किया जा रहा है। कुछ जनजातीय समुदायों में इस प्रकार की रेखाओ का आशय उनकी कुल पीढ़ियों को दर्शाने के रूप में भी किया जाता है।

3. सकरी

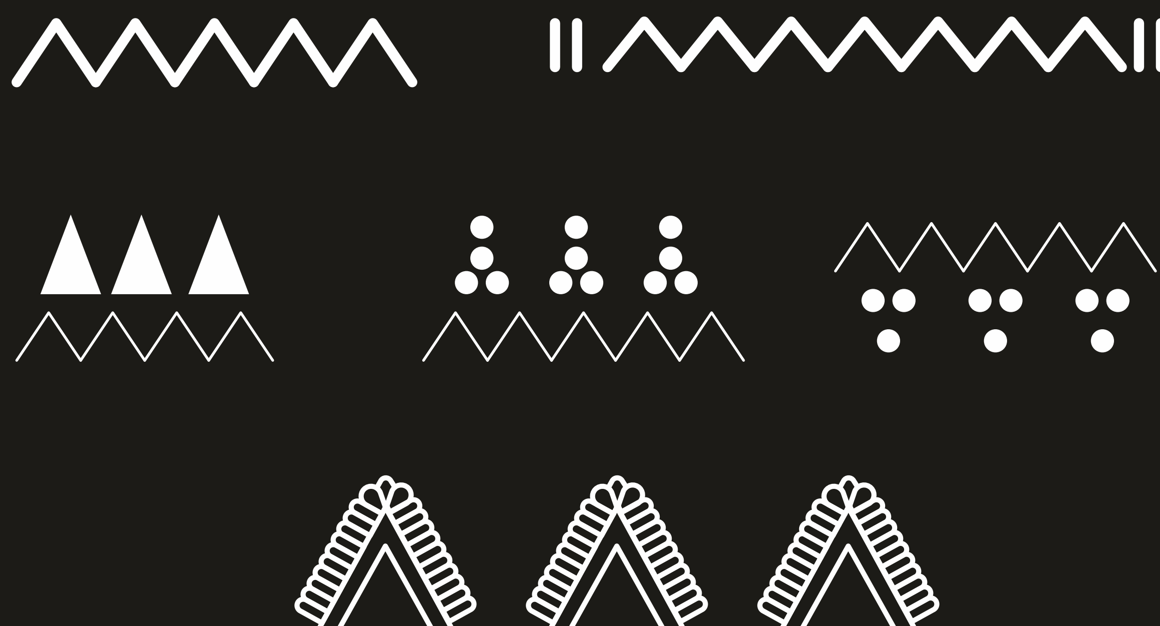

सकरी का आशय एक प्रकार से टेड़े-मेड़े (Zig-Zag) रेखीय आकृति से है। इसमें एक रेखा एक बार उपर की जाती हुई दिखती है और पुनः उसका वह नीचे की ओर जाती दिखलायी पड़ती है। इस प्रकार यह कई पहाड़ियों के रुप मे भी दिखायी देती है। सकरी का उपयोग भुंजिया गोदना में क्षैतिज ही दिखाई देता है।

4. पैढ़ी

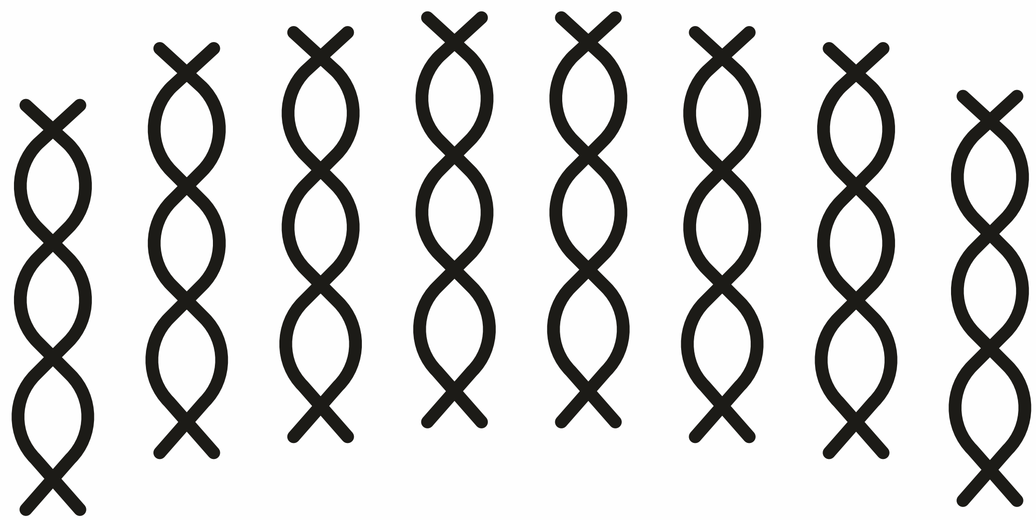

पैढ़ी या पायल या पाजेब की आकृति कमोबेस सकरी (लोहे की जंजीर या बेड़ी) की आकृति के समान ही होती है। किन्तु कभी-कभी यह त्रिभुजाकार न होकर अर्द्धगोलाकार रुप में दिखलायी पड़ता है। इसे अधिकांशतः पैरो में ही बनाया जाता है।

5.पान या ईंटा

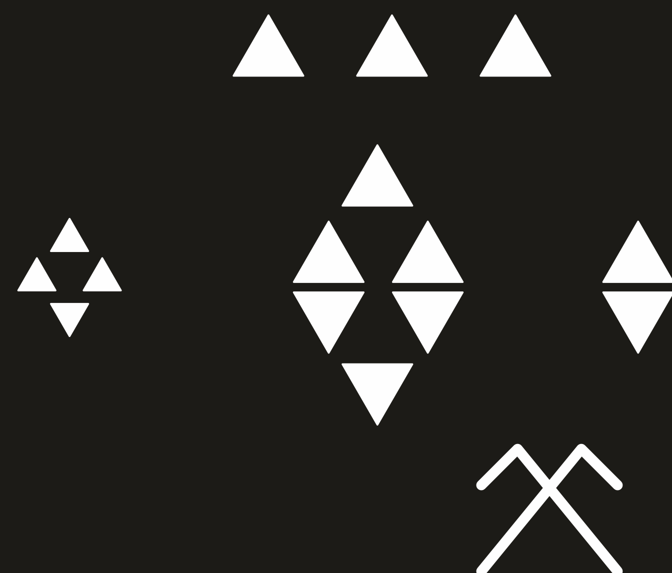

इस प्रकार की आकृति को ज्यामितीय संरचना के रुप में भी देखा जा सकता है। भुंजिया जनजाति में बांह की अधिकांश आकृतियों को त्रिभुजाकार रुप में बनाया जाता है जो पूर्ण रुप से भरे हुए होते है जिन्हें ये पान या ईंटा छाप कहकर संबोधित करते है।

6. कट-मट

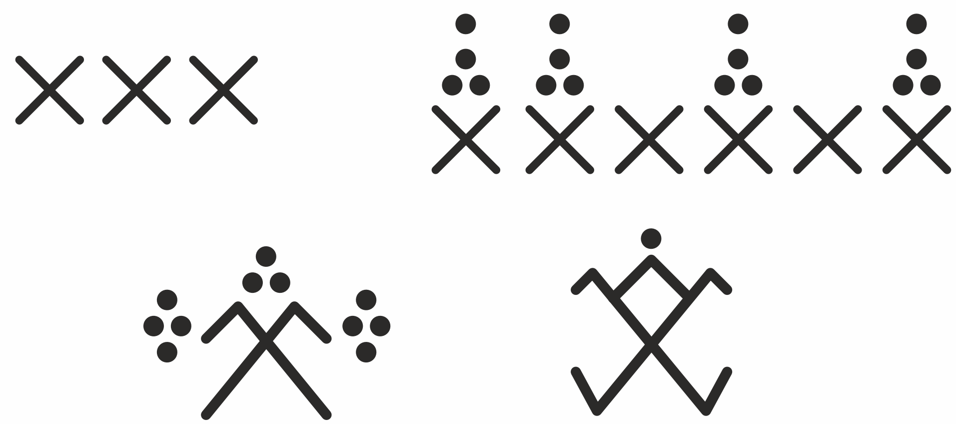

रेखीय आकृति का एक प्रकार यह भी है जिसमें गोदना को अंग्रेजी के ग् अक्षर के रूप में बनाया जाता है। जिसे स्थानीय भाषा में कट-मट कहा जाता है। इस आकृति का उपयोग भी एक विशिष्ट आकृति के प्रारंभ, अंत, उपर या नीचे किया जाता है। भुंजिया जनजाति में यह आकृति कभी-कभी ज्यामितीय संरचना के बीच में भी दिखाई देती है।

उपरोक्त आकृति या ज्यामितीय संरचना का उपयोग कर विभिन्न प्रकार की आकृतियों या स्वरूपों को गोदना के रूप में अंकित किया जाता है।

जनजातियों में प्रचलित गोदना की आकृतियां उनके परिवेश में व्याप्त विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पुष्प, फल, पौधों इत्यादि प्राकृतिक चीजां पर आधारित होती है। इनमें गोदना उक्त आकृति की प्रतिकृति होती है। जो उन्हें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है अथवा जोड़ती है। साथ यह आकृतियां उनके जीवन के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक पहलुओं व दायित्वों को भी स्मरण कराती रहती है। भुंजिया जनजाति की महिलाओं में गोदना की निम्नांकित कृतियां पायी जाती है -

7. करेला चानी

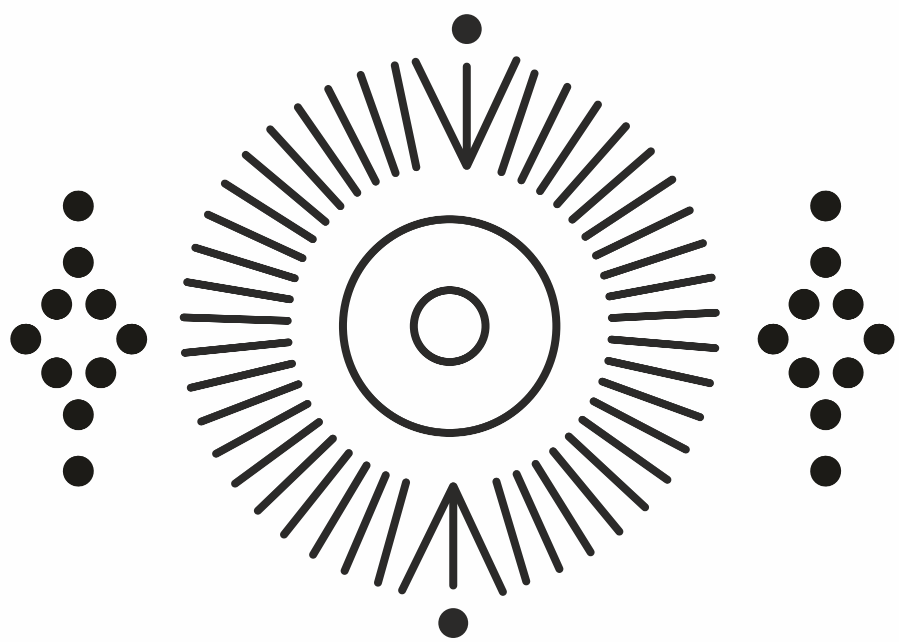

यह आकृति गोलकार एवं अर्द्धगोलाकार आकृति का मिश्रण है। स्थानीय लोगो द्वारा करेला चानी का अर्थ करेला (Bitter Gourd) को काटने पर प्राप्त आकृति से लिया गया है।

12.फूल-पत्ती

वर्तमान या परम्परागत रुप से स्थानीय क्षेत्रों में उपलब्ध फूलों की प्रतिकृति भी गोदना के रूप में उकेरी जाती है। जो निम्नानुसार है

-

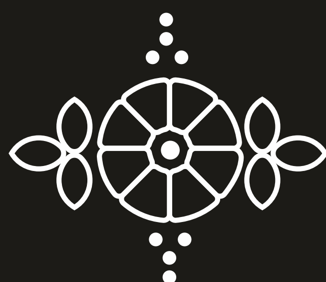

अ) गोंदा फूल

(Marigold Flower/Tagetes)

ब) फूड़हर फूल

(Calotropis gigantea Flower)

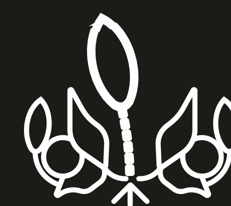

स) चमेली फूल

(Jasminum Flower)

द) मदार

(Hibiscus Flower)

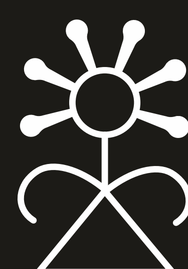

य) सूरजमूखी

(Sun Flower/Helianthus)

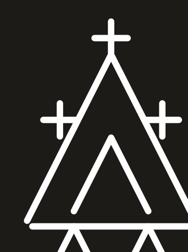

र) केवरा फूल

(Kewara Flower)

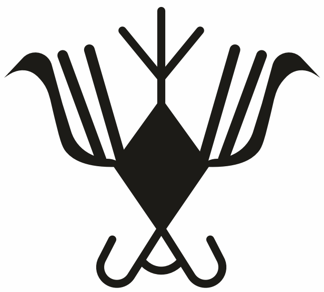

ल) कमल फूल

(Lotus Flower)

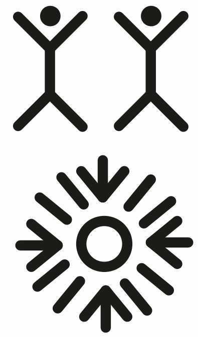

व) ओडनीन फूल

(Odnin Flower)

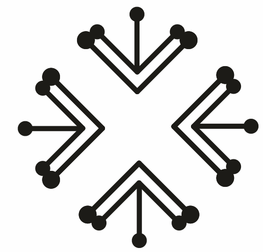

श) छिंद फूल

(Chhind Flower)

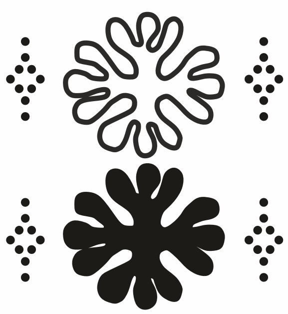

च) सुपारी/सुपाड़ी फूल

(Betel Flower)

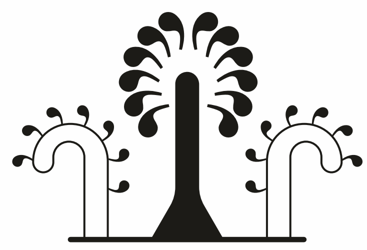

छ) भेजरा फूल

(Bhegra Flower)

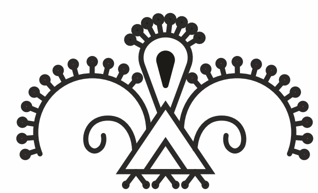

ज) झुमका फूल

(Jhumka Flower)

9. प्रकृति/ सौर मण्डल संबद्ध-

जनजातीय गोदना में एक विशेषता यह भी है कि, महिलाओं के अंगों में किये जाने वाले गोदना चिन्हों में सूर्य (Sun), चन्द्रमा (Moon), तारे (Stars) को भी अपनी कल्पना के अनुसार बिन्दु, गोलाकार, अर्द्धगोकार और रेखीय रुप में गढ़ने की कोशिश की जाती है। जिससे वे स्वयं को प्रकृति के और अधिक समीप व जुड़े होने का अनुभव करते है। ये आकृतियां निम्न है -

अ) सूर्य

जनजातियां स्वयं को प्रकृति से संबंधित मानती है। उनके व्यवहार एवं कार्य प्राकृतिक क्रिया के अनुरुप तथा प्रकृति के सानिध्य में ही जुड़ा रहता है। भुंजिया जनजाति भी प्रकृति पूजक है। उनकी आस्था का केन्द्र और विश्वास प्रकृति एवं सौर मण्डल के ग्रहों पर भी बना रहता है।

भुंजिया जनजाति के द्वारा उनके लाल बंगला के समीप सूर्यमूखी के पौधे भी लगाये जाते है। जो प्रकृति पर उनकी आस्था एवं विश्वास को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार ग्रहों की आकृतियां भी इनके शरीर पर गोदना के रूप में गुदवायी जाती है।

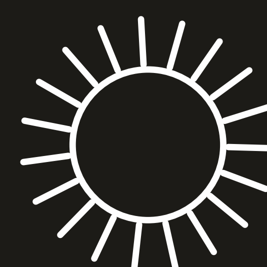

सूर्य

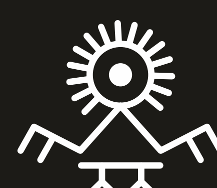

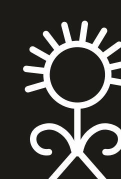

ब) चंद्रमा -

चंद्रमा शीतला, सुन्दरता और प्रेम का प्रतीक है। शरीर पर चंद्रमा के समान आकृति का सीधा संबंध सौंदर्य और शीतला से लगाया जा सकता है। अतः भुंजिया जनजाति में गोदना में चंद्रमा की आकृति भी देखने को मिलती है।

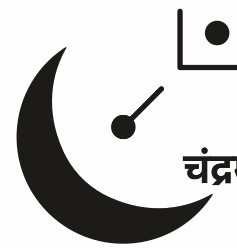

चंद्रमा

स) तारा-

प्रकृति में तारों का स्थान उनकी निरंतरा एवं एक जुटता को प्रदर्शित करता है वहीं आकाश में तारें उसकी सुन्दरा को बढाते है। जनजातीय समुदाय में तारों को अपने पूर्वजों के रूप में भी देखा जाता है। जो इनके द्वारा गोदना के रूप में शरीर पर अंकित की जाती है।

तारा

10.जीव आधारित-

भुंजिया जनजाति में उनके आस-पास पाये जाने वाले छोटे जीवों के गुणो या स्वभाव के अनुसार भी गोदना उकेरा जाता है। जैसे - गोदना कराने से गोदना किये अंगों में दर्द, सूजन या जलन होने को विष चढ़ने से जोड़कर देखा जाता है। अधिकांश महिलाओं के द्वारा इससे बचने या सुरक्षा के लिए शरीर के विभिन्न अंगों में गोदना हो जाने के बाद अंत में हाथ के अंगुठे व प्रथम उंगली के मध्य के स्थान पर बिच्छु (Scorpiones)की आकृति गुदवायी जाती है जिससे माना जाता है कि, बिच्छु की आकृति उकेरे जाने के बाद गोदना का विष शरीर पर नही फैलेगा और गोदना से शरीर को कोई हानि होगी।

बिच्छु/बिच्छी

11. मछली कांटा -

भुंजिया जनजाति में गोदना की आकृतियों में मछली के कंकाल या कांटों की आकृति भी दिखालाई पड़ती है। मांसाहार जनजातीय खाद्य व्यवहार का अंग रहा है। खाद्य या भोजन से संबंधित दायित्वों का निर्वहन परिवार में महिला सदस्यों द्वारा किया जाता है। अतः मछली की आकृति गोदना में महिलाओं के गृहस्थ जीवन एवं खाद्य व्यवस्था में उनके संग्रहण, कार्यशीलता एवं उदरपूर्ति को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार अन्य वन्य जीवों की आकृतियां भी डांडी एवं टिपका के मिश्रण से तैयार किया जाता है।

मछली कांटा

बन कुकरा

12.धार्मिक आधार -

भुंजिया जनजाति में धार्मिक आधार या मान्यता के अनुरुप भी आकृतियां गोदना के रुप में देखने मिलती है। मध्य क्षेत्र में निवासरत भुंजिया जनजाति में इस प्रकार की आकृति कम दिखाई देती है किन्तु धार्मिक आधार की यह गोदना कृतियां सीमावर्ती राज्य उड़ीसा में निवासरत अथवा सीमावर्ती क्षेत्रों में निवासरत भुंजिया जनजाति की महिलाओ में अधिकता में देखने को मिलता है।

जिसमें शंख (Conch Shell) सुदर्शन चक्र, देवी के मुकुट (Goddesses Crown) पादुका(Foot) प्रतिमा(Statue) मंदिर (Temple) धनुष-बाण (Bow and Arrow) तथा प्रख्यात मंदिरों की छवि आदि सम्मिलित होती है।

शंख

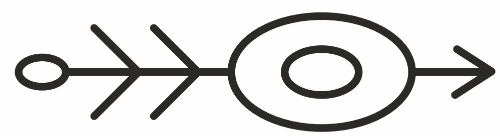

धनुष- बाड़

भुंजिया जनजाति में गोदना के प्रकार या आकृतियां

उपरोक्त वर्णन के अनुसार भुंजिया जनजाति में बिन्दु, रेखीय, गोलाकार व अर्द्धगोलाकार आकृति, त्रिभुजाकार ज्यामितीय व अन्य संरचनाएं शरीर पर उकेरी जाती है। एक ही प्रकार की संरचनाओं की पीढ़ी दर पीढ़ी पुनर्रावृत्ति जाति विशेष को उसकी एक पृथक पहचान भी प्रदान करती है। भुंजिया जाति में गोदना की विभिन्न संरचनाएं अंग विशेष में भी एक रुपता लिए होती है जो निम्नांकित है-

1. तीन टिपका या मुंहमुठकी

टिपका या **बिन्दु (Dot)** का उपयोग अधिकांश गोदना की आकृतियों में किया जाता है। गोदना में बिन्दु का उपयोग कर उसे अन्य बिन्दुओं के साथ जोड़कर एक पूर्ण आकृति का बनाई जाती है। भुंजिया जनजाति की महिलाओं में टिपका का उपयोग शरीर के विभिन्न अगों में गोदे जाने वाले गोदना में होता है। किन्तु महिलाओं के चेहरे के नासिका एवं ठुड्डी के मध्य गुदायी जाने वाली आकृति जिसे मुहमुठकी कहा जाता है, में **03 टिपका या बिन्दु भुंजिया जनजाति में विशिष्टता का प्रतीक है।**

2. बाहां

स्थानीय भाषा में कंधे के नीचे एवं कोहनी के ऊपर के भाग को बाहां कहा जाता है, जिसका अर्थ भूजा से है। बाहां में टिपका और डाड़ी को मिलाकर विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनायी जाती है। साथ ही इस भाग पर क्षेत्र में प्रचलित नागमोरी (बांह में पहनने वाला एक आभूषण) की प्रतिकृति बनायी जाती है। इस आकृति में टिपका, डाड़ी और ईंटा/पान के गोदना को मिश्रित कर विशिष्ट आकृति बनाई जाती है। इन मिश्रित कलाकृति के नीचले भाग में सकरी (टेड़ी-मेड़ी (Zig-Zag) गुदना गोदकर आकृति को और भी सुन्दरता प्रदान की जाती है। भुंजिया महिलओं में इस भाग पर ही क्षेत्र के आधार पर गोदना की आकृतियां भिन्न-भिन्न बनाई जाती है। जिसे भुंजिया गोदना या **ओडिया गोदना** भी कहा जाता है।

3. पहुंचा

हाथ की कोहनी और कलाई के मध्य भाग को स्थानीय बोली में पहुंचा कहा जाता है। हाथ के इस भाग के दोनों ओर गोदना गुदाया जाता है। इस भाग पर भी टिपका, डाड़ी, कट-मट और ईंटा/पान की कलाकृति से विशिष्ट गोदना तैयार किया जाता है। इस प्रकार सम्मिलित रुप से इस भाग के गोदना को पहुंचा कहा जाता है। भुंजिया महिलाओं में हाथ के ऊपरी भाग में गोदना में भिन्नता होती है किन्तु भीतरी भाग के गोदना में एकरुपता दिखलायी पड़ती है। जो इन्हें अन्य समुदायों से पृथक करता है। भुंजिया जनजाति में हाथ के इस भाग में गुदाये गये गोदना में भी क्षेत्र का प्रभाव विशेषकर दिखता है। साथ ही उनकी कलाई में गोदना के स्वरुप इन्हें स्वयं की उपजातियों से भी पृथक करते है। कलाई में गुदवाये इस गोदना की आकृति में ईंट/पान की छाप, कट-मट एवं डाड़ी की संख्या, उनका एक निश्चित क्रम पृथक होता है। जैसे चिंदा भुंजिया में केवल ईंट/पान की आकृति 3-5 पंक्ति के क्रम में होती है। जबकि चिन्दा भुंजिया में ईंट एवं पान के साथ कट-मट की आकृति अतिरिक्त रूप से उपर की पंक्ति के क्रम होती है। वहीं खोलारजिया/खोलारझिया उपजाति में ईंट, कट-मट तथा सकरी का समावेश हाथ के इस स्थान पर गुदवाया जाता है। जो कहीं न कहीं उन्हें एक-दूसरे से पृथक होने का परिचय देते है।

4. हथोरी

हाथ के पंजे के ऊपरी भाग को हथोरी कहा जाता है। सामान्यतः हथोरी पर टिपका को डाड़ से मिलाकर गोलाकार आकृतियां बनायी जाती है। ये आकृतियां किसी स्थानीय फूल, धार्मिक वस्तु जैसे शंख, चक्र आदि पर आधारित होती है, जिसे अन्य टिपका के समूहों से विशिष्ट बनाया जाता है। हथोरी पर हाथ के अंगुठे व प्रथम उंगली के मध्य के स्थान पर बिच्छु (Scorpiones) की आकृति गुदना पूर्ण होने के बाद **निशा (जहर)** उतारने के लिए एक टोटके के रूप में गुदवायी जाती है।

5. पैड़ी या पैरी

भुंजिया महिलाओं द्वारा पैर पर घुटने के नीचे व पंजों के ऊपर के भाग पर गुदाये जाने वाले गोदना को सम्मिलित रुप से **पैड़ी या पैरी** कहा जाता है। पैड़ी का शाब्दिक अर्थ पायल या पाजेब से है। महिलाएं जिस प्रकार पैरों में पायल या पाजेब धारण करती है, उसी प्रकार इनकी प्रतिकृति

के रुप में गोदना से पैड़ी की आकृति गुदवायी जाती है। पैड़ी में स्थानीय फूल, पक्षी तथा सकरी के रुप में गोदना गुदवाया जाता है। इस भाग पर पैड़ी को पैर की पूरी गोलाई में गुदवाया जाता है जो एक वास्तविक पायल के रुप मे दिखलायी पड़ता है।

6. बिछिया

पैर पर पंजों के ऊपर उंगलियों के ऊपर टिपका से आभासी बिछिया की आकृतियां बनायी जाती है, जो क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा चांदी की बिछिया के सामान ही दिखलायी पड़ता है। बिछिया बनाने में टिपका एवं डाड़ी का उपयोग किया जाता हैं।

राज्य की भुंजिया जनजाति की महिलाओं में उक्त आकृतियों एवं शरीर के अंगों के अतिरिक्त अन्य भागों या अंगों में गुदना की आकृतियां कम ही दिखलायी पड़ती है। किन्तु सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमावर्ती उड़ीसा राज्य से विवाह कर आयी महिलाओं में क्षेत्र में प्रचलित गोदना की विभिन्न आकृतियां गुदायी जाती है। सीमावर्ती राज्य से आयी महिलाओं में गर्दन के नीचे अर्थात् छाती पर भी गोदना की कई आकृतियां गहने के रुप में विशेषकर दिखलायी पड़ती है। जिसे राज्य में उड़ीया गोदना भी कहा जाता है।

वर्तमान परिवेश में नव युवतियों द्वारा गोदना के प्रति आसक्ति कम ही दिखाई देती है किन्तु उनके द्वारा आज भी अनिवार्य रुप से मुंहमुठकी करायी जाती है तथा इसके अतिरिक्त इनमें हथोरी एवं पहुंचा पर गोदना आंशिक रुप से कराया जाता है।

राज्य की भुंजिया जनजाति की महिलाओं में उक्त आकृतियों एवं शरीर के अंगों के अतिरिक्त अन्य भागों या अंगों में गुदना की आकृतियां कम ही दिखलायी पड़ती है। किन्तु सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमावर्ती उड़ीसा राज्य से विवाह कर आयी महिलाओं में क्षेत्र में प्रचलित गोदना की विभिन्न आकृतियां गुदायी जाती है। सीमावर्ती राज्य से आयी महिलाओं में गर्दन के नीचे अर्थात् छाती पर भी गोदना की कई आकृतियां गहने के रूप में विशेषकर दिखलायी पड़ती है। जिसे राज्य में **उड़ीया गोदना** भी कहा जाता है।

वर्तमान परिवेश में नव युवतियों द्वारा गोदना के प्रति आसक्ति कम ही दिखाई देती है किन्तु उनके द्वारा आज भी अनिवार्य रूप से मुंहमुठकी करायी जाती है तथा इसके अतिरिक्त इनमें हथोरी एवं पहुंचा पर गोदना आंशिक रूप से कराया जाता है।

Scan QR to Know More

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

संचालनालय आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर-24, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)

फोन: 0771-2960530

E-mail : trti.cg@nic.in, web. : www.cgtrti.gov.in